बदलाव लाने के लिए अलग,
अत्यधिक वृद्धि करें – भाग 12
डॉ॰ डेविड प्लॉट

हमारे पास एक उद्धारकर्ता है जिसने प्रेम का प्रचार करते समय प्रेम को दिखाया। उसने रोटी तोड़ी और फिर कहा वह जीवन की रोटी है। वह जल के बारे में बात करता है, वह जल देता है, और वह बताता है कि वह जीवन का जल है। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा वह हमारे प्रति अपने प्रेम को दिखाता है।

हम एक ऐसे परमेश्वर की तस्वीर को देखते हैं जो प्रेम का प्रदर्शन करना चाहता है। हम ऐसे लोगों को देखते हैं–हम में से प्रत्येक–जो उस प्रेम का प्रदर्शन करने में सक्षम हैं। ऐसी कोई बात नहीं थी जिसे हम में से कोई न कर सकता हो। चाहे आप किसी को बेसबॉल न पकड़ा सकते हों, या चित्र न बना सकते हों, या तलवार को गुब्बारा न बना सकते हों, लेकिन कम से कम आप एक सूटकेस को तो उठा सकते हैं। आप अपने साथ एक अतिरिक्त सूटकेस भी ले सकते हैं, जो उन सब साधनों से भरा हो जिनकी तीसरी दुनिया के देशों में लोगों को आवश्यकता है।

हमारा परमेश्वर सब लोगों के प्रति अपने प्रेम को दिखाना चाहता है। उसके लोग, उस प्रेम को दिखाने में सक्षम, और उस प्रेम को सम्पूर्ण दुनिया को दिखाने के लिए उसके पास एक योजना है। आज सुबह जो सवाल मैं आप से पूछना चाहता हूँ, वह हैः कलीसिया परमेश्वर की योजना को कैसे पूरा कर रही है?

यदि आपके पास बाइबल है, और मेरी आशा है कि आपके पास है, मेरे साथ प्रेरितों के काम 1 और 2 अध्याय निकालें।
हमने इसके बारे में बात की कि किस प्रकार यीशु उद्धार पाने वालों को प्रतिदिन उन में मिला देता था, जब वे एकीकृत थे और बढ़ रहे थे, संख्यात्मक और गुणात्मक रूप में बढ़ रहे थे, आराधना कर रहे थे और गवाही दे रहे थे, इकट्ठे होते थे और बिखरते थे। हम कलीसिया के बढ़ने की रीति की अन्तिम विशेषता पर आ रहे हैं, यीशु ने कलीसिया को कैसे बढ़ाया।

यदि मैं आपके साथ पूरी तरह ईमानदार रह सकूँ, मुझे निश्चय है कि यह आखरी विशेषता यदि सर्वाधिक महत्वपूर्ण नहीं तो सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है–और जो दूसरी किसी भी विशेषता से अधिक हमें खींचेगी। और मेरा विश्वास है कि यही है जहाँ हम आज की कलीसिया में पूरी तरह चूक गए हैं।

आज हम कुछ मुश्किल बातों को देखने वाले हैं इसलिए तैयार रहें। हमने देखा कि कैसे उन्होंने उन बातों को एक साथ मिलाया जिन्हें हम अक्सर अलग करते हैंः एकीकृत होना/फैलना, आराधना करना/गवाही देना, इकट्ठा होना/बिखरना। आज जो हम देखने वाले हैं वह यह कि कैसे उन्होंने स्थानीय और वैश्विक को एक साथ रखा।

स्थानीय और वैश्विक। हमारे एक लेखक, लूका द्वारा लिखी दो पुस्तकें हैं, लूका–प्रेरितों के काम। लूका के सुसमाचार की शुरूआत में, वह यीशु के मन्दिर में और आराधनालय में होने की तस्वीर दिखाता है। यह एक पूर्णतः यहूदी तस्वीर है। यही वह स्थान है जहाँ प्रेरितों के काम पहले अध्याय की शुरूआत होती है––एक पूर्णतः यहूदी तस्वीर, जहाँ सारे चेले यरूशलेम में एकत्रित हैं।

रूचिकर बात, यद्यपि, तब है जब आप प्रेरितों के काम की पुस्तक के अन्त में––प्रेरितों के काम 28 में आते हैं। वहाँ पूरी तरह एक अलग तस्वीर है। यह यहूदी तस्वीर से एक अन्यजाति तस्वीर में रूपान्तरित हो गई है, जहाँ पौलुस अन्यजाति रोम में है, यहूदी मत से सर्वाधिक दूर स्थान, और वह वहाँ सुसमाचार का प्रचार कर रहा है। लूका और प्रेरितों के काम में एक परिवर्तन है जो हमें दिखाता है कि आरम्भिक कलीसिया ने स्थानीय और वैश्विक को एक साथ रखा।

अब, याद रखें हम यहाँ क्या कर रहे हैंः हम एक कदम पीछे हट रहे हैं, आरम्भिक कलीसिया की इस तस्वीर पर एक नजर। पिछले तीन महीने, हमने सीखा कि आरम्भिक कलीसिया को किस बात ने अलग बनाया। अब हम देखें––मसीह यहाँ क्या कर रहा है? वह हमें क्या बता रहा है कि हम कलीसिया में जिस तरह करते हैं उस में कुछ कमी है? उन्होंने स्थानीय और वैश्विक को एक साथ रखा।

प्रेरितों के काम 1:8 को देखें। यह एक पद है जो मैं जानता हूँ कि आप में से कुछ लोगों के लिए बहुत परिचित होगा। इस श्रंखला में हमने इसे कई बार पढ़ा है। मैं चाहता हूँ कि आप इस एक शब्द को चिन्हित करें जो तीन बार आता हैः "जब पवित्र आत्मा तुम पर उतरेगा तो तुम सामर्थ पाओगे।" यह यीशु अपने चेलों से कह रहा है। "और तुम यरूशलेम में, और सारे यहूदिया में और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह बनोगे।" एक शब्द जो मैं चाहता हूँ आप तीन बार चिन्हित करें––लिखा हैः "तुम यरूशलेम में।" अगला शब्द क्या है? "और।" इसे चिन्हित करें। "और सारे यहूदिया में।" अगला शब्द क्या है? "और।" "और सामरिया।" एक और बारः "और पृथ्वी की छोर तक।"

बहनों और भाईयो, हमने प्रेरितों के काम 1:8 के "और" को लेकर "या" बना दिया है। कलीसिया के रूप में हमने निर्णय लिया कि हम चुनेंगे कि हम कब और कहाँ सुसमाचार लेकर जाएँ——यरूशलेम में या यहूदिया में या सामरिया में या पृथ्वी की छोर तक। और यह बाइबल के अनुसार नहीं है।
यह प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक के लिए एक रूपरेखा है। अध्याय 1 से 7 में, सुसमाचार पूरे यरूशलेम में फैलता है, लेकिन अध्याय 7 के अन्त में वह वहाँ ठहर जाता है। स्तिफनुस को पत्थरवाह किया जाता है, और प्रेरितों के काम 8:1–4 कहता है कि सुसमाचार "सारे यहूदिया और सामरिया में तितर–बितर हो गया," और प्रेरितों के काम अध्याय 1 में जो कहा गया वह पूरा होता है।

प्रेरितों के काम 8, 9, और 10 अध्यायों में सुसमाचार सारे यहूदिया और सामरिया में फैलता है। जब लूका अध्याय 9 के अन्त में आता है, वह बताता है कि कैसे कलीसियाओं में सुसमाचार दृढ़ हुआ, और यह सारे यहूदिया और सामरिया में फैल गया। आप प्रेरितों के काम 10:34 पर आते हैं, और पतरस कहता है, " अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।" और वह अपना सुसमाचार, अपना अनुग्रह, अपना प्रेम, और अपनी करूणा सब लोगों को दिखाना चाहता है, चाहे वे किसी भी जाति के हों और कहीं भी रहते हों।

यह आरम्भिक कलीसिया को खोलता है, और प्रेरितों के काम 11–28 अध्यायों में अन्ताकिया की कलीसिया की एक तस्वीर है जब वे सुसमाचार को अन्यजातियों तक ले जाने लगे, ऐसे लोगों के पास जो उनके समान नहीं थे। जब उन्होंने ऐसा किया, बाइबल कहती है "परमेश्वर का हाथ उनके साथ था।" परमेश्वर ने इस शेष पुस्तक में उन्हें उपयोग किया, और वे सुसमाचार को पृथ्वी की छोर तक लेकर जाते हैं, यरूशलेम से यहूदिया और सामरिया, पृथ्वी की छोर तक——दोनों "और।"

उन्होंने अलग नहीं किया: "या तो हम यहाँ सुसमाचार सुनायेंगे या वहाँ।" यीशु सुसमाचार द्वारा सम्पूर्ण संसार को प्रभावित करने की कलीसिया की जिम्मेदारी के बारे में गम्भीर था। मुझे निश्चय है कि आज हम इसे भूल चुके हैं। यहाँ प्रकट हो रही तस्वीर से हम चूक गए हैं। हमने दोनों के बीच में अन्तर किया है, और मुझे निश्चय है है कि यह उन मुख्य कारणों में से एक है जिनके कारण हमारी आज की कलीसियाएँ प्रेरितों के काम की कलीसिया जैसी नहीं दिखती।

मैं किसी ऐसी कलीसिया को नहीं जानता——मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि ऐसी कोई कलीसिया नहीं है, परन्तु मैं किसी ऐसी कलीसिया को नहीं जानता——जिसके पास सुसमाचार से संसार को प्रभावित करने की रणनीति है और वह उसे पूरा कर रही है।

मैं चाहता हूँ हम दो अलग–अलग पहलुओं को देखें:

1. **एक खतरनाक रीति**
2. **एक सक्रिय विकल्प**

खतरनाक रीति, मेरा विश्वास है, वह गड्ढ़ा है जिस में हम गिर चुके हैं। सक्रिय विकल्प वह तस्वीर है जो हम नये नियम की कलीसिया में देखते हैं।

हम खतरनाक रीति से शुरू करेंगे। मैं चाहता हूँ हम उन तीन वाक्यांशों के बारे में सोचें जिन्हें हम बहुधा आज की कलीसिया में कहते हैं। जब हम उन्हें कहते हैं, तो मेरा विचार है कि हम मसीहियत और पवित्रशास्त्र की समझ की कमी को दिखाते हैं। मेरा विचार है कि वे केवल इस तथ्य के लिए बहाने हैं कि हम संसार को सुसमाचार के लिए नहीं बेध रहे हैं।

वाक्यांश 1: "परन्तु मुझे विदेशी मिशन के लिए नहीं बुलाया गया है। आप हर बार देशों के बारे में बात करते हैं, परन्तु मुझे विदेशी मिशन के लिए नहीं बुलाया गया है।"

जब हम ऐसा कहते हैं, तो आमतौर पर हमारा मतलब इनमें से कोई एक होता है: पहला, हमें मिशन के लिए नहीं बुलाया गया है, "कार्यक्रम" के रूप में। हम महान आज्ञा को एक वैकल्पिक कार्यक्रम में बदल देते हैं जो कुछ विश्वासयोग्य लोगों के लिए है जिन्हें वास्तव में इसके लिए बुलाया गया है। "यह उनका सौदा है।"

हम महान आज्ञा को लेकर उसे एक कार्यक्रम में डालते हैं, जो उसे ऐसी आज्ञा बनाने के विपरीत है जो हम सब के जीवनों से ऊपर है। हम उस आज्ञा को अनदेखा करते हैं।

हम मत्ती 28:19 को देखते हैं, जो कहता है "सारी जातियों को चेला बनाओ," और हम कहते हैं, "यह दूसरों के लिए है।" जब हम यीशु के वचनों पर आते हैंः "हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूँगा," और हम कहते हैं "यह मेरे लिए है।"

हम कहते हैं, "तुम पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह बनोगे," और हम कहते हैं, "यह दूसरे लोगों के लिए है।" फिर हम देखते हैं, "अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा," और हम कहते हैं, "यह मेरे लिए है।"

हमारे पास क्या अधिकार है कि हम मसीहियत की जिम्मेदारियों और मसीहियत के विशेषाधिकारों के बीच अन्तर की रेखा खींचें? किस अधिकार से हम कहते हैं कि मसीहियत के सारे विशेषाधिकार हमारे लिए हैं और जिम्मेदारियाँ केवल कुछ चुनींदा लोगों के लिए हैं?

अतः पहला, हम सोचते हैं, "मुझे मिशन के लिए नहीं बुलाया गया है," मिशन एक "कार्यक्रम" के रूप में।

यह कहते समय दूसरी बात जो हम अक्सर सोचते हैं वह है, "मुझे घरेलू मिशन के लिए बुलाया गया है, विदेशी मिशन के लिए नहीं। हर व्यक्ति को विदेशी मिशन के लिए नहीं बुलाया गया है।" हम में से अधिकाँश लोग घरेलू मिशन में निरन्तर शामिल नहीं हैं।

परन्तु यदि हैं, तो हम कहते हैं, "मेरा दिल बर्मिंघम के लिए है," या "मेरा दिल संयुक्त राज्य के लिए है।" हम सोचते हैं कि ये तीन वाक्यांश अच्छे––और आत्मिक भी लगते हैं, जब तक हमें पता न चले कि ये सारे वाक्यांश हमारी आत्मिक दशा की कमजोरी को प्रकट करते हैं। परमेश्वर का दिल संसार के लिए है। यदि परमेश्वर का दिल संसार के लिए है, और आपका दिल संयुक्त राज्य के लिए है, तो इसका मतलब आपके पास परमेश्वर के दिल का 5 प्रतिशत है। यदि आपका दिल बर्मिंघम या अल्बामा के लिए है, तो आपके पास परमेश्वर के दिल का एक प्रतिशत से भी कम है।

हमने ऐसा विचार बना लिया है कि हमारे पास परमेश्वर के दिल का 5 प्रतिशत है और हम वास्तव में इसके बारे में घमण्ड करते हैं। "मेरा दिल संयुक्त राज्य के लिए है।" हमने यह विचार बना लिया है कि जब हम कहते हैं हमारे पास परमेश्वर के दिल का इतना छोटा प्रतिशत है, तो वह वास्तव में हमारी ज्यादा

आत्मिकता को दिखाता है। हम यह कहने के द्वारा चूक जाते हैं, "मुझे घरेलू मिशन के लिए बुलाया गया है, विदेशी मिशन के लिए नहीं।"

यह विचार, मूल रूप से, केवल इस तथ्य की अधिकाई है कि हमने महान आज्ञा को केवल एक कार्यक्रम बना दिया है, या हमने "घर" और "विदेश" में अन्तर करने की कोशिश की है, और आप उस में से एक या दूसरे को चुनते हैं। मैं इस कथन पर विश्वास करता हूँ––"परन्तु मुझे विदेशी मिशन के लिए नहीं बुलाया गया है"––यह कथन हमारे उद्धार की गैर–धर्मशास्त्रीय समझ को प्रतिबिम्बित करता है।

जब आप प्रेरितों के काम 9 में आते हैं, उदाहरण के लिए, पौलुस को लें। जब पौलुस का मसीह से सामना हुआ, वह अपने पापों से उद्धार पाता है, उस समय, तुरन्त वह इसे बुलाहट के रूप में देखता है जातियों में सुसमाचार की घोषणा––अन्यजातियों में––और यही वह बाद में हमें बताता है।

अपनी बाइबल में दांयी ओर आएँ। गलातियों 1 में जाएँ। मैं चाहता हूँ आप पौलुस को अपने उद्धार के बारे में बताते हुए देखें, और मैं नहीं चाहता कि आप इस से चूक जाएँ। पौलुस अपने उद्धार के उद्देश्य को बता रहा है। परमेश्वर उसे क्यों बचाया? देखें पौलुस गलातियों 1:15–16 में क्या कहता है: "परन्तु परमेश्वर की, जिस ने मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया, जब इच्छा हुई, कि मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे कि मैं अन्यजातियों में उसका सुसमाचार सुनाऊँ; तो मैं ने मांस और लोहू से सलाह न ली।" क्या आपने सुना? उसने कहा, "परमेश्वर की इच्छा हुई कि मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करे," "मसीह को मुझ में प्रकट करे।" वह उद्देश्य वाक्य––परमेश्वर ने मुझ में अपने पुत्र को प्रकट करने की इच्छा क्यों की––ताकि मैं क्या करूँ? अन्यजातियों के बीच, जातियों के बीच उसका प्रचार करूँ, उसका सुसमाचार सुनाऊँ। अतः मसीह मुझ में है कि मैं जातियों के बीच उसका प्रचार करूँ।

इससे न चूकें। पौलुस यह नहीं कह रहा है कि यह हमारे जीवनों में विशेष बुलाहट पर निर्भर है। वह कह रहा है यह हमारे उद्धार का उद्देश्य है। मसीह हमारे अन्दर है, इसलिए यह स्वाभाविक है कि हम अपने जीवनों को सम्पूर्ण संसार में सुसमाचार सुनाने के लिए दे देंगे।

रोमियों की तरफ आएँ। रोमियों 1 को देखें, यह वहाँ और भी स्पष्ट है। मैं चाहता हूँ आप एक पद को देखें जिसे रेखांकित करने के लिए मैं आपको प्रेरित करना चाहूँगा। रोमियों 1: पौलुस यहाँ परिचय शुरू कर रहा है। पद 14 को देखें।

पौलुस सुसमाचार का स्पष्टीकरण देने वाला है, और मैं चाहता हूँ आप देखें वह क्या कहता है। "मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूँ। सो मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर विश्वास करनेवाले के लिए, पहले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।"

मैं चाहता हूँ आप एक शब्द पर ध्यान दें––आप इसे चिन्हित कर सकते हैं। लिखा है, "मैं जिम्मेदार हूँ।" आपके कुछ अनुवाद कह सकते हैं, "मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूँ।" पौलुस यहाँ क्या कह रहा है "मैं कर्जदार हूँ––इससे न चूकें––मैं इस संसार में प्रत्येक खोए हुए व्यक्ति का सीधा कर्जदार हूँ कि उन्हें सुसमाचार सुनाऊँ। मैं कर्जदार हूँ, मैं संसार के प्रति जिम्मेदार हूँ।" इससे न चूकें। मसीह पौलुस का है, इसलिए मसीह के लिए वह संसार का कर्जदार है।

क्या इसका कोई मतलब है? इसका मतलब है कि हम सब की अपने जीवनों में एक जिम्मेदारी है। हमने उद्धार पाया है, इसलिए उसे संसार को बताना हमारी जिम्मेदारी है। यह एक विशेष बुलाहट नहीं है। यह हमारे उद्धार का उद्देश्य है। स्वर्ग के बाहर का हर व्यक्ति उद्धार पाया हुआ व्यक्ति नरक से बाहर के हर खोए हुए व्यक्ति का कर्जदार है।

मैं इसे एक बार और बताता हूँ: स्वर्ग के इस तरफ प्रत्येक उद्धार प्राप्त व्यक्ति––जिस में मसीह है, परमेश्वर ने इच्छा की कि मसीह को हम में प्रकट करे–– हम में से प्रत्येक नरक की इस तरफ, पृथ्वी पर हर एक उद्धार न पाए हुए व्यक्ति के प्रति कर्जदार है। हम उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए जिम्मेदार हैं। हम पूरे संसार के कर्जदार हैं।

हम इससे चूक गए हैं। हमने जान–बूझकर अपने आप को खोए हुए और मृत्यु के मुँह में जा रहे संसार के बोझ के नीचे से निकाल लिया है, और अपन हाथ धो लिए हैं, और कहते हैं, "क्या यह भयानक नहीं हैं जो पूरे संसार में हो रहा है?" हमने अपने आप को विश्वासियों के रूप में उन्हें सुसमाचार सुनाने की अपनी जिम्मेदारी से अलग कर लिया है। हमने स्थानीय को वैश्विक से अलग कर दिया है, और अपने उद्धार के उद्देश्य से ही चूक गए हैं।

हम कैसे कह सकते हैं कि हमने अपने पापों से उद्धार पा लिया है, और हमें क्रूस पर यीशु के लहू के द्वारा अनन्त जीवन की आशा है, और आराम से बैठ कर उसे शेष संसार को न बताने के लिए बहाने बनाते रहें?

क्या यह बाइबल के अनुसार है? हम इसे आत्मिक कथन में ढ़ांप देते हैं, जैसे, "मुझे विदेशी मिशन के लिए नहीं बुलाया गया है।" हे परमेश्वर, हमारी सहायता कर कि हम ऐसा न कहें।

दूसरा कथन जो हम कहते हैंः "क्या मेरे लिए जाने की बजाय देना अच्छा नहीं होगा?" मैं नहीं चाहता कि आप मुझे यहाँ गलत समझें। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मसीह के अनुयायियों के रूप में देना हमारे मिशन का हिस्सा नहीं है। निश्चित रूप से है। हम इसके बारे में बात कर चुके हैं कि हम सब से हिसाब मांगा जाएगा कि हमने अपने धन को कैसे खर्च किया। निस्सन्देह, देना इसका एक हिस्सा है।

मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहता हूँ। मेरा विश्वास है कि यह कथन, पूरी तरह, हमारे उद्धार की नहीं, बल्कि उस सुसमाचार की गैर–धर्मशास्त्रीय समझ को प्रकट करता है जिस पर हम विश्वास करते हैं। कुछ वर्ष पूर्व मैं सूडान जाने की तैयारी कर रहा था, यह एक महंगी यात्रा थी, 3000–3500 डॉलर। वहाँ विमान से जाना बहुत महंगा है और उसके साथ खाद्य सामग्री इत्यादि। मुझे याद है एक महिला ने मुझ से आकर कहा, "डेविड, तुम खुद जाने की बजाया केवल धन क्यों नहीं भेज देते? क्या तुम्हारे डेढ़ सप्ताह के लिए वहाँ जाकर रहने से अच्छा यह नहीं होगा कि उन्हें 3500 डॉलर मिल जाएँ?"

मुझे उस सवाल से जूझना अब भी याद है। क्या जाने से बेहतर देना नहीं होगा? क्या मैं एक जिम्मेदार भण्डारी हूँ? फिर हम सूडान में गए––यह एक ऐसा देश है जहाँ पिछले बीस वर्षों से जारी गृहयुद्ध में हमारे लाखों भाई और बहन जान गँवा चुके हैं, वहाँ हम बमबारी से क्षतिग्रस्त एक गाँव में बैठे थे। वहाँ बैठा मैं एन्ड्रयू नामक एक युवा विश्वासी से बात कर रहा था।

एन्ड्रयू ने मेरी ओर देखा और कहा, "डेविड, पिछले बीस वर्षों में," (जो मूलतः उसका पूरा जीवन है), "बहुत से लोग हमारे लिए सामान लाए हैं––जिन में अधिकाँश दूसरे देशों की सरकारी अनुदान प्राप्त एजेन्सियाँ थी––उन्होंने हमारे लिए सामान भेजा, परन्तु क्या तुम जानना चाहते हो कि तुम कैसे बता सकते हो कि कौन सच्चा भाई है?"

मैं ने पूछा, "कैसे?"

एन्ड्रयू ने मेरी ओर देखा और कहा, "डेविड एक सच्चा भाई गहन जरूरत के समय में तुम्हारे पास रहने के लिए आता है। तुम एक सच्चे भाई हो।"

अब यह कैसे सुसमाचार की गैर–धर्मशास्त्रीय समझ को दिखाता है? इससे न चूकें। जब परमेश्वर ने मेरे और आपके उद्धार का निर्णय लिया, उसने––परमेश्वर की स्तुति हो––उसने सोना या चान्दी या पैसा या चैक नहीं भेजा। उसने अपने आप को भेजा। तो फिर हमें यह विचार कहाँ से मिला कि यदि हम अपने धन को भेजें, तो वह सुसमाचार से संसार को बेधने के लिए सर्वाधिक प्रभावशाली तरीका होगा? हम अपने धन को भेज देंगे, लेकिन हम खुद नहीं जायेंगे। यह पूरी तरह सुसमाचार के विरूद्ध है।

ऐसा नहीं कि देना महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन यदि हम परमेश्वर के वचन को लेकर न जाएँ तो हम सुसमाचार को कैसे दिखा सकते हैं? क्या हमारी सोच इतनी छिछली है कि केवल हमारे चैक––हमारा धन ही––इस संसार की आवश्यकताओं का उत्तर है? हम जानते हैं यह सत्य नहीं है। हम जानते हैं कि बहुत से लोगों के पास आलीशान भवन, कारें, और बड़ा बैंक खाता है। उन घरों में दर्द, दुख, निराशा, परमेश्वर से अलगाव और गहन आवश्यकताएँ हैं। हम जानते हैं कि धन इसका उत्तर नहीं है। तो जब उन करोड़ों लोगों की बात आती है जिन्होंने कभी यीशु का नाम नहीं सुना है, तो क्यों हम देना चाहते हैं परन्तु जाना नहीं चाहते? यह सुसमाचार की सारी तस्वीर से चूक जाता है। हे परमेश्वर, हमारी सहायता करें कि हम सुसमाचार में इस बिन्दू तक तोड़–मरोड़ न करें जहाँ हम अपने धन को भेजें परन्तु खुद न जाएँ।

तीसरा कथन जो हम कहते हैं: "फिर यहाँ की जरूरतें?"

यह भी हमारी आत्मिक गरीबी को छिपाने का एक परदा है। हम सोचते हैं यह आत्मिक लगता है। "मैं यहाँ की जरूरतों के बारे में चिन्तित हूँ। आप हर समय देशों की बात करते हैं, पासबान, परन्तु न भूलें कि यहाँ भी जरूरत है।" यह आत्मिक परदा है, क्योंकि हम में से अधिकाँश लोग स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने में नहीं लगे हैं। हम में से कितने लोग भूखों को भोजन खिलाते हैं? आप में से कितने लोग अपने परिवार से बाहर किसी व्यक्ति को विश्वास में लाए हैं? यह आत्मिक परदा है।

परन्तु यदि हम करते भी हैं––चाहे हम सक्रियता से शामिल हों, स्थानीय जरूरतो को पूरा करते हों––मेरा विश्वास है यह कथना हमारे उद्धार या सुसमाचार के बिन्दू से नहीं चूकता है, परन्तु मेरा विश्वास है कि यह पूरी तरह तरस की गैर–धर्मशास्त्रीय समझ को प्रतिबिम्बित करता है। जब हम यह कहते हैं, हम दिखाते हैं कि हम में परमेश्वर की तरस नहीं है।

मेरा मतलब है, जब यीशु ने भीड़ को देखा, मत्ती 9:36–38 में, "उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाईं जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे।" जब उसने भीड़ और आवश्यकताओं को देखा, उसके अन्दर तरस उमड़ा। इसका मतलब, उस तरस के लिए––मसीह के समान आपके अन्दर तरस उमड़ने के लिए––आप को भीड़ को देखना होगा। परन्तु हमने भीड़ को अनदेखा करना चुन लिया है।

यह बाइबल के तरस की गलत समझ है। तरस चुनता नहीं है––यह चुनाव नहीं करता––कि हम किस किस पर तरस खायेंगे और किस पर नहीं। तरस यह नहीं कहता, "तरस उन पर दिखा जिन पर तरस खाना आसान है, जो मेरे सबसे निकट हैं, जो मेरे ठीक सामने हैं।" यह धर्मशास्त्रीय तरस नहीं है। धर्मशास्त्रीय तरस कहता है, "परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह को दिखाने में हम चुनाव नहीं करेंगे। हम यहाँ की आवश्यकताओं और वहाँ की आवश्यकताओं के बीच अन्तर नहीं करेंगे।"

आप में से कुछ लोग सोच रहे हैं, "आप हर समय सारे देशों में जाने की बात करते हैं। जब आप उन सारे देशों में जाने के लिए कहते हैं तो क्या आप उन देशों के बारे में चुन नहीं रहे हैं और यहाँ की आवश्यकताओं को अनदेखा नहीं कर रहे हैं? क्या आप चुन नहीं रहे हैं?

मैं सोचता हूँ, नहीं। कलीसिया के रूप में हम कह रहे हैं कि हमें अपने द्वारा प्रदर्शित मसीह के तरस पर सीमाएँ बान्धना बन्द करना होगा। हम बैठ कर यह नहीं कहेंगे, "हम हमारे सामने जो है उसके बारे में चिन्तित हैं," और शेष संसार को अनदेखा कर दें। यह बाइबल के अनुसार नहीं है, और यह यीशु मसीह के तरस का अनादर करता है। सुनने में यह अच्छा लगता है––"और यहाँ की जरूरतें?" परन्तु यह न भूलें––हमारे संसार में, कूड़े के बारे में बात करना–सूडान में ऐसे लोग हैं जो नगर के कूड़े में से भी खाने की लालसा करते हैं।

यीशु ने कहा, "जो कुछ तुम इन सबसे छोटे से करते हो, वह ....करते हो" किस के लिए? "मेरे लिए करते हो।" इसलिए अन्तिम सवाल यह नहीं है, "क्या तुम संसार के बच्चों पर तरस करते हो," बल्कि यह है "क्या हमें यीशु की परवाह है?" हमें इस सवाल का उत्तर देना है। हम इस सवाल का जिस प्रकार उत्तर देते हैं उसका हमें हिसाब देना होगा।

"मुझे वहाँ के लिए नहीं बुलाया गया है, पासबान, मुझे वहाँ के लिए नहीं बुलाया गया है।" यदि आप एक नदी के किनारे पर खड़े हों, और आप दो बच्चों को धारा में डूबते हुए देखें, तो क्या आप कुछ करने से पहले किसी पुकार का इन्तजार करेंगे? क्या आप बहाने बनायेंगे कि यह सही समय नहीं है, या यह आपकी जिम्मेदारी नहीं है, या आपको अपनी जिम्मेदारियों को पहले देखना है? बिल्कुल नहीं। उस समय, आवश्यकता बुलाहट को निर्धारित करती है।

हे परमेश्वर, हमारी सहायता करें कि हम आवश्यकता को देख सकें, और उद्देश्य को देख सकें, जिस उद्देश्य के लिए हमें बचाया गया है। यह बुलाहट नहीं है। यह हमारी मसीहियत का उद्देश्य है, और जब हम ऐसी बातों को कहते हैं तो हम इससे पूरी तरह चूक जाते हैं। क्योंकि प्रक्रिया में, हम स्थानीय को वैश्विक से अलग कर देते हैं। हम प्रेरितों के काम 1:8 में "या" जोड़ देते हैं।

क्या आप खुश नहीं है कि यरूशलेम के चेलों ने हमारे इस दर्शन को नहीं अपनाया? क्या आप खुश नहीं हैं कि उन्होंने यह नहीं कहा, "मुझे विदेशी मिशन के लिए नहीं बुलाया गया है," या "मैं अपना धन दे दूँगा"? क्या आप खुश नहीं है कि उन्होंने यह नहीं कहा, " और यहाँ की आवश्यकताएँ?" यदि उन्होंने ऐसा किया होता, तो आज हमारे पास सुसमाचार नहीं होता, क्योंकि यह अब भी मध्य–पूर्व में ही होता।

यीशु इस बारे में गम्भीर है कि उसकी कलीसिया सुसमाचार को पूरे संसार में लेकर जाए। वह इसके बारे में बहुत गम्भीर है। मैंने पहले बताया कि मैं ऐसी किसी कलीसिया को नहीं जानता जिसके पास पूरे संसार तक सुसमाचार पहुँचाने की रणनीति है और उसे पूरा कर रही है।

मैं आप से कहना चाहता हूँ, कि अब इसे बदलने का समय है। यह समय है कि हम संसार में सुसमाचार न पहुँचाने के लिए अपने बहानों और आत्मिक परदों से ऊपर उठें, और उस उद्देश्य को गम्भीरता से लें जिसके लिए हमें बचाया गया है। यह समय है कि हम उन कथनों को पीछे छोड़ दें जिन्हें हम आत्मिक समझते हैं। आइए हम इस खतरनाक रीति को छोड़कर अपने आप को सक्रिय विकल्प के लिए दे दें–दो क्षेत्र जिन्हें मैं चाहता हूँ आप प्रेरितों के काम में प्रकट होते देखें:

1.**संसार पर प्रभाव डालने वाले चेले।** पूरे प्रेरितों के काम की पुस्तक में आप एक के बाद एक तस्वीर देखते हैं––तिमुथियुस, पौलुस, सीलास, बरनबास, स्तिफनुस, फिलिप्पुस, लुदिया––ये सारे लोग जो अपने अकेले

जीवन से संसार का सामना कर रहे हैं, सुसमाचार को फैला रहे हैं जो उन्हें सौंपा गया है, और उसे पृथ्वी की छोर तक फैला रहे हैं, और उन में से प्रत्येक संसार पर प्रभाव डाल रहा है।

हे परमेश्वर, ऐसा हो कि विश्वासियों की एक मण्डली एक साथ इकट्ठी होकर कहे, "हम अपने जीवन से संसार का सामना करेंगे, और हम मसीह की महिमा के लिए देशों पर प्रभाव डालेंगे।" इसके बारे में सोचें। फसल––करोड़ों लोग जिन्होंने यीशु का नाम नहीं सुना है, और उनके अतिरिक्त वे लाखों लोग जो हर प्रकार के गलत विचारों और दृष्टिकोणों में पड़े हैं जो महिमा के योग्य एकमात्र परमेश्वर से उसकी महिमा को छीन लेते हैं–– इस प्रकार की फसल के साथ, यदि एक किसान उस खेत में फसल उगाए, तो क्या वह एक बड़ा गड्ढ़ा खोदकर 4,000 बीजों को एक साथ उसी में डाल देगा? क्या यह फसल उगाने का सर्वोत्तम तरीका है?

बिल्कुल नहीं। क्या होगा यदि बीजों को एक साथ एक बड़े गड्ढ़े में डाल दिया जाए और वे बढ़ने लगें? वे एक दूसरे को दबाने लगेंगे। हे परमेश्वर, हमारी सहायता कर कि हम कलीसिया की तस्वीर देख सकें।

परन्तु क्या होता है जब किसान उन 4,000 बीजों को लेकर पूरे खेत में बिखेर दे, और वे उगने लगें, और फिर वह फसल को इकट्ठी करने के लिए तैयार है? वह क्या करता है? क्या वह खलिहान में खड़े होकर फसल को अन्दर आने के लिए कहेगा? नहीं, वह एक हास्यास्पद रणनीति होगी। एक भवन में खड़े होकर सोचना कि फसल अन्दर आ जाएगी–क्या यह एक हास्यास्पद रणनीति नहीं होगी?

सावधान रहें हम इसका उत्तर कैसे देते हैं। नहीं, यदि फसल कटनी के लिए तैयार है, तो वह खेत में लोगों को इकट्ठा करेगा। और वे उसे एकत्रित करेंगे।

इस प्रकार, नये नियम की कलीसिया की तस्वीरः खलिहान में खड़े होना नहीं, एक गड्ढ़े में सारे बीजों को डालना नहीं, परन्तु बीजों को सारे संसार में उगाना। संसार को प्रभावित करने वाले चेले।

आप में से कुछ लोग सोच रहे हैं, "पासबान आप इसे नहीं समझ रहे हैं। मैं विदेश नहीं जा रहा हूँ।"
आप समझ नहीं रहे हैं। आप समझ नहीं रहे हैं। मैं आपके पेशे को बदलने की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं इसके बारे में बात नहीं कर रहा हूँ कि आप अपना घर कहाँ बनायेंगे। मैं इसके बारे में बात नहीं कर रहा हूँ कि आप अपने परिवार को कहाँ पालेंगे।

मैं आपके जीवन के बारे में बात कर रहा हूँ, महान आज्ञा के प्रति समर्पित, और कहना "हे परमेश्वर, मेरे एक जीवन को जहाँ चाहे वहाँ बिखेर।" कल्पना करें, अगले वर्ष, यदि आप अपने जीवन का दो प्रतिशत, केवल दो प्रतिशत, विदेश जाने के लिए दें, स्थानीय को वैश्विक से जोड़ें? यदि आप अपने दिनों का दो प्रतिशत–सात दिन–अगले वर्ष दें, तो इससे बड़ा अन्तर आएगा।

यदि आप अगले वर्ष स्थानीय को वैश्विक से जोड़ने के लिए अपने जीवन का दो प्रतिशत दें, और संसार में जहाँ सर्वाधिक आवश्यकता है वहाँ मसीह का प्रचार करें और उनकी जरूरतों को पूरा करें तो? यदि आप केवल दो प्रतिशत दें, तो आप क्या सोचते हैं कि क्या होगा?

मैं आपको बताता हूँ क्या होगा। मैं आपको गारण्टी देता हूँ क्या होगा। परमेश्वर उस दो प्रतिशत को लेगा, और वह शेष 98 प्रतिशत को बदल देगा।

चाहे हम छोटी अवधि के मिशन की बात करें, हम इससे चूक जाते हैं। हम स्थानीय को वैश्विक से अलग कर देते हैं। हम बात करते हैं, "विदेश में सप्ताह के लिए तैयार होने के लिए मैं वर्ष के 51 सप्ताह प्रशिक्षण लेने जा रहा हूँ।" उन्हें मिलाने की बजाय हम उन्हें अलग कर देते हैं, जबकि हमें कहना चाहिए, "हे परमेश्वर, मेरे पास वाले 51 सप्ताहों को रूपान्तरित करने के लिए मुझे एक सप्ताह के लिए दूसरी पृष्ठभूमि में इस्तेमाल कर।" मैं आपको गारण्टी देता हूँ, यदि आप अगले वर्ष अपने जीवन का दो प्रतिशत देते हैं–सात दिन–तो मैं आपको गारण्टी देता हूँ, परमेश्वर आपको चुनौती देगा और वह आपके दृष्टिकोण को बदल देगा। वह आपकी आँखों को खोलेगा कि आप उसे देखें जो वह देखता है।

हम उन्हें एक साथ रखते हैं, स्थानीय को वैश्विक से जोड़ते हैं। यह रूपान्तरित करता है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि बीज अब पूरे खेत में बिखेरे जा रहे हैं? क्या यह एक अच्छी तस्वीर नहीं है?

ओस्वाल्ड स्मिथ ने सही कहा थाः "ज्योति जो दूर तक चमकती है वह सबसे अधिक चमकदार होती है" कहाँ? "घर में।" आप उन्हें एक साथ मिलाएँ, और आपके पास संसार को प्रभावित करने वाले चेलों की तस्वीर है जो, अपने दिनों के केवल दो प्रतिशत के साथ, मसीह की महिमा के लिए सारी पृथ्वी पर फैल रहे हैं। डिज्नी वर्ल्ड में जाने की बजाय वे परमेश्वर के वैश्विक मिशन के लिए जा रहे हैं। इससे न चूकें।

संसार को प्रभावित करने वाले चेले सदा बढ़ने वाली कलीसियाओं को उत्पादित करते हैं। यह इस सक्रिय विकल्प का दूसरा अवयव है। यह कोई नई रणनीति नहीं है। यह प्रेरितों के काम की रणनीति है।

मेरे साथ इसके बारे में सोचें। यदि हम विदेश जाते हैं, या किसी दूसरी पृष्ठभूमि में जाते हैं, केवल एक सप्ताह–सात दिन के लिए–तो क्या इस तरह से हम एक कलीसिया को शुरू कर सकते हैं? क्या हम सात दिन में एक कलीसिया शुरू कर सकते हैं? शायद नहीं। सात दिनों में आप कुछ महत्वपूर्ण काम कर सकते हैं, परन्तु संभवतः एक पूरी कलीसिया को शुरू नहीं कर सकते हैं, पूरी कलीसिया का निर्माण–केवल भवन नहीं, बल्कि कलीसिया, लोग। परन्तु क्या होता है, जब उन सात दिनों में आप उन कलीसियाओं के विश्वासियों के जीवन में निवेश करना शुरू करें, और उन्हें कुछ प्रशिक्षण और संसाधन देना शुरू करें––वे साधन जिनकी संसार को प्रभावित करने वाले चेले बनने के लिए अधिक प्रभावशाली बनने हेतु उन्हें आवश्यकता है–और हम अपने देश और उस देश के विश्वासियों से हाथ मिलाना शुरू करते हैं। हमारे सात दिन उनके साथ रहने के कारण, वे विश्वासी अपने स्थान पर संसार को प्रभावित करने वाले चेलों के रूप में अधिक प्रभावी बन सकेंगे, और कलीसियाएँ बढ़ने लगती हैं। एक साथ हम हाथ मिलाते हैं, और हम एक साथ दूसरे देश में जाते हैं। आपको जो तस्वीर मिली है वह परमेश्वर के परिवार, यीशु मसीह की कलीसिया, संसार को प्रभावित करने वालों के रूप में एक साथ संगठित चेलों और बढ़ती हुई कलीसियाओं की तस्वीर है।

यह परमेश्वर की योजना है। नये पासबान ने नई रणनीति नहीं बनाई है। यह पहले से ही है। हमने इसे अनदेखा किया है। हम इससे चूक गए हैं। हम इस तस्वीर से चूक गए हैं कि अपने आप को मिशन के लिए देने का क्या अर्थ है।

मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। यदि लोगों का एक समूह आपस में एक–दूसरे का हाथ पकड़कर एक गोल घेरे में खड़ा हो जाए। अब, हमारी कलीसियाएँ ज्यादारतर ऐसी ही दिखती हैं। समस्या केवल एक है, वे किस एकमात्र वस्तु को देख सकते हैं? एक–दूसरे को। अब, यदि हम उन्हें कुछ समय के लिए यहाँ छोड़ दें, तो वे थोड़े परेशान होने लगेंगे। वे एक–दूसरे में ऐसी बातें देखेंगे जिन्हें वे ज्यादा पसन्द नहीं करते। वे हमेशा एक–दूसरे को देखते रहने से असहज होन लगेंगे। इससे समस्या की शुरूआत होती है, शायद कोई टकराव। क्या यह परिचित लगता है?

वे हास्यास्पद बातों की शिकायत करने लगेंगे, जैसेः

"उन्हें आज संगीत की शैली पसन्द नहीं आई," या
"मैं कलीसिया में सहज नहीं था," या
"उस व्यक्ति ने मुझ से बात नहीं की," या
"उस व्यक्ति ने मेरा अभिवादन नहीं किया," या
"प्रचारक के पास बहुत अधिक समय है," या
"उसके पास मुझ से मिलने के लिए समय नहीं है।"

चहे जो भी हो, हम अत्यधिक हास्यास्पद बातों के बारे में शिकायत करने लगते हैं। बहनों और भाईयो, यीशु क्रूस के ऊपर इसलिए नहीं मरा कि हम एक–दूसरे को देखते हुए, चिपके हुए और संसार की आवश्यकताओं से दूर अपना जीवन बिताएँ।

हाथों को मिलाकर घेरा बनाने का एक दूसरा तरीका भी है। प्रत्येक व्यक्ति घूम जाए। यह सब कुछ बदल देता है, क्या नहीं? इससे न चूकें: एकीकृत होना और फैलना। हम में अब भी एकता है। व`अब भी साथ हैं, विश्वास के परिवार के रूप में हाथ मिलाए हुए हैं। परन्तु उनके चेहरे किस तरफ हैं? उनके चेहरे बाहर की ओर हैं, और उनका दृष्टिकोण बदलने लगता है। वे उसे देखने लगते हैं जो यीशु देखता है।

एक माँ दूसरी एक माँ को देखती है जिसके हाथ में बच्चा है, और बच्चा रो रहा है क्योंकि उसके पेट में कीड़े हैं, और माँ इसके बारे में कुछ नहीं कर सकती। यह इस स्वयंसेवक के इस दृष्टिकोण को बदल देता है कि वह आराधना में कितनी सहज है।

एक और मसीह का अनुयायी एक अनाथ बालक को देखता है जिसके पास न कमीज है और न जूते और न माता–पिता, जिसकी एकमात्र अलार्म घड़ी सड़का का गर्म फुटपाथ है, जो उसे सुबह उठाता है और वह गोंद बेचकर खुद के लिए अगले भोजन का इन्तजाम करने के लिए निकल पड़ता है। यह इस स्वयंसेवक द्वारा संगीत की शैली के उसकी इच्छानुसार न होने के बारे में उसकी सोच को बदल देता है।

इस पूरे घेरे में, परमेश्वर अपने दृष्टिकोण का प्रयोग करता है–चाहे यह हमारे दिनों का दो प्रतिशत ही हो–वह हमारे शेष वर्ष के बारे में दृष्टिकोण को बदल देता है।

इससे न चूकें। यह कलीसिया की तस्वीर है।

मैं आज आप से पूछना चाहता हूँ: हमारे साथ और कौन है? कौन दो प्रतिशत देगा? कौन कहेगा, "मैं स्थानीय और वैश्विक को मिलाऊँगा, और मैं अगले वर्ष के अपने दिनों के दो प्रतिशत को उस उद्देश्य के लिए दूँगा जिस के लिए मुझे बचाया गया है। मैं स्थानीय और वैश्विक को अलग करना बन्द करूँगा, और मैं अपने दिनों का दो प्रतिशत दूँगा।"

मैं जानता हूँ कि यह सवाल पूछते ही आप सोचेंगे, "मैं कहाँ जाऊँगा?" या "इसमें कितना खर्च होगा?" या "मैं क्या करूँगा?" या "इसमें या उसमें यह कैसे सफल होगा?"

बहनों और भाईयो, यह समय है कि हम सवाल पूछना और बहाने बनाना बन्द करके आज्ञाकारी बनें। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वे सवाल महत्वपूर्ण नहीं हैं। वे सब महत्वपूर्ण हैं। लेकिन, हम इसके पूरे होने का प्रबन्ध करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें जिसने हमें यह योजना दी है। भरोसा करें कि वह हमारे सारे सवालों का उत्तर देने के लिए पर्याप्त है। वह इसे संभालने के लिए पर्याप्त है। सवाल यह है, क्या उसके द्वारा हमें दी गई योजना को मानेंगे जिसे आशीष देने का उसने वायदा किया है? उसने इस योजना को आशीष देने का वायदा किया है। हम कहें, "हे परमेश्वर, हम खुद को आपकी योजना के लिए समर्पित करते हैं, हम आपकी आशीष की अपेक्षा रखते हैं, और हम आपकी आशीष पर भरोसा रखेंगे। हम दो प्रतिशत देंगे।"

सात दिन। बड़ा अन्तर नहीं है। "मैं स्थानीय को वैश्विक से जोड़ूँगा। मैं इसकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी लूँगा। पूरे संसार में, मैं अपने कर्ज को चुकाऊँगा।"

हम पूरे संसार को प्रभावित करने वाले चेलों के साथ हाथ मिलायेंगे। हम अपने आप को उस बात के लिए समर्पित करेंगे जिसने आरम्भिक कलीसिया को अलग बनाया। हम उसे जोड़ेंगे जिसे हमने बहुत लम्बे समय से अलग कर रखा है।